एकीकृत कृषि प्रणाली: किसानो की आय बढ़ाने का एक प्रभावी विकल्प

पवन कुमार गुप्ता[1] एवं अंजली यादव[2]
[1]कृषि प्रसार शिक्षा विभाग, [2]खाद्य विज्ञान एवं पोषण विभाग
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश)
ईमेल: pawanag10799@gmail.com

एकीकृत कृषि प्रणाली एक समग्र दृष्टिकोण है। जिसमें खेती के विभिन्न उद्यमों का सहयोगात्मक तरीके से उपयोग कर खेती की जाती है ताकि एक उद्यम का अपशिष्ट दूसरे के लिए निवेश के रूप में कार्य करे। एकीकृत कृषि प्रणाली एक मिश्रित कृषि प्रणाली है जिसमें पशुपालन, मछली, मुर्गी पालन और अन्य लाभकारी उद्यम जैसे विभिन्न उद्यम कम जोखिम के साथ अधिक लाभ देते हैं। जो गंभीर जलवायु परिस्थितियों के मामले में फसलों के नुकसान को कम करने में सहायक होते है। एकीकृत कृषि प्रणाली से विभिन्न उद्यमों के कुशल उपयोग से सीमान्त किसानों के जीवन स्तर को बढ़ाया जा सकता है।

प्राकृतिक प्रणालियों के विविधीकरण की आवश्यकता

भोजन की बढ़ती मांग के साथ-साथ कृषि-पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण को बनाए रखने के लिए मौजूदा फसल कृषि प्रणालियों को पुनर्संतुलित करने की आवश्यकता है। यह एकीकृत कृषि प्रणाली के माध्यम से संभव है। जिसमें पूरक कृषि उद्यमों का उपयुक्त संयोजन जैसे कि फसल प्रणाली, पशुधन, मत्स्य पालन, वन और मुर्गी पालन इत्यादि शामिल है। व्यापक और नवीन कृषि प्रणालियाँ कृषक परिवार की आय और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने में सहायक होगी।

एकीकृत कृषि प्रणाली के घटक

एकीकृत कृषि प्रणाली के महत्वपूर्ण घटकों में कृषि से संबंधित सभी उद्यम जैसे कृषि, मशरूम की खेती, मछली पालन, बागवानी, रेशम उत्पादन, बत्तख पालन, बीज उत्पादन, सब्जी उत्पादन, चारा उत्पादन, मुर्गी पालन, खरगोश पालन, एजोला खेती, मूल्यवर्धन, नर्सरी, बकरी - भेड़ पालन, मधुमक्खी पालन और

कबूतर पालन आदि शामिल हैं।

एकीकृत कृषि प्रणाली के उद्देश्य

एकीकृत कृषि प्रणाली का प्राथमिक लक्ष्य साल भर स्थिर और सुसंगत आय बनाए रखना है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

- एकीकृत कृषि प्रणाली के माध्यम से उत्पादकता की बहाली या सुधार से कृषि-पारिस्थितिकी संतुलन सुनिश्चित करना।
- प्राकृतिक फसल प्रणाली प्रबंधन के माध्यम से कीट-पतंगों, बीमारियों और खरपतवार की आबादी को दूर रखना और उन्हें तीव्रता के निम्न स्तर पर रखना।
- समाज को स्वस्थ भोजन और स्वच्छ वातावरण प्रदान करने के लिए रसायनों के उपयोग को कम करना।
- वर्तमान समय में होने वाली अधिक मांग के अनुसार जैविक खाद्य पदार्थों का उत्पादन।

एकीकृत कृषि प्रणाली का दृष्टिकोण

एकीकृत कृषि प्रणाली के दृष्टिकोण को कृषि आय, पारिवारिक पोषण और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल सुधार के लक्ष्य के साथ उन्नत कृषि प्रबंधन उपकरणों के साथ न्यूनतम प्रतिस्पर्धा और अधिकतम पूरकता के कार्डिनल सिद्धांतों का उपयोग करके दो या दो से

अधिक घटकों का विवेकपूर्ण मिश्रण के रूप में वर्णित किया जा सकता है। एकीकृत कृषि प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें निम्नलिखित लक्ष्य अपनाए जाते है:-

- भारत के कृषि क्षेत्र में उभर रही समस्याओं से निपटने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के लिए खेती के तरीकों की लाभप्रदता बढ़ाने के लिए सबसे प्रभावी उपकरण एकीकृत कृषि प्रणाली है।
- दूर दराज के क्षेत्रों में बढ़ते उपभोक्ता खर्च के परिणामस्वरूप अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए किसानों की नकदी की जरूरतों में सुधार हुआ है। किसानों को अपनी आय और भोजन की जरूरतों को पूरा करने के लिए पशुधन, फल- फूल और औषधीय पौधों की खेती, मधुमक्खी पालन और मत्स्य पालन जैसे माध्यमिक और तृतीयक उद्यमों को अपनाना पड़ा है।
- पोषण संबंधी सुधार के अलावा कृषक परिवारों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करना।
- उपलब्ध संसाधनों का सबसे कुशल उपयोग करके और कचरे का उचित तरीके से पुनर्चक्रण करके परिवार की आय में वृद्धि करना।

वर्तमान कृषि की समस्याएँ

- o स्थिर या घटती कृषि की विकास दर ।
- o तेजी से शहरीकरण के कारण शुद्ध कृषि योग्य क्षेत्र में कमी।
- o पर्यावरण प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों का बढ़ना।
- o अंधाधुंध उपयोग के कारण भूजल स्तर में गिरावट।
- o बढ़ती जनसंख्या के कारण भूमि जोत में कमी।
- o पारंपरिक प्रथाओं के कारण कम आय ।
- o बड़े पैमाने पर प्रवासन।

एकीकृत कृषि प्रणाली के लाभ

सामान्य तौर पर यह कृषि प्रणाली किसानों के जीवन स्तर को बढ़ाकर उन्हें लाभान्वित करती है और उनकी सामाजिक आर्थिक उन्नति में योगदान देता है। एकीकृत कृषि प्रणाली के अन्य लाभ निम्नलिखित है -

- खेत की उत्पादकता में वृद्धि के परिणामस्वरूप प्रत्येक इकाई क्षेत्र से आर्थिक उपज बढ़ जाती है।
- कचरे के पुनर्चक्रण के कारण उत्पादन लागत में कमी आई जिससे लाभप्रदता में सुधार हुआ।
- आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण घटकों को कृषि उत्पादन में एकीकृत कर शामिल किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप स्थिरता में सुधार हुआ है।
- विभिन्न कृषि घटकों के एकीकरण से कुपोषण की समस्या को हल किया जा सकता है क्योंकि विभिन्न प्रकार के खाद्य उत्पादों का उत्पादन किया जाता है।
- किसानों को विविध खाद्य पदार्थों तक आसान पहुंच है।
- उत्पादन के लिए कृषि अपशिष्टों का पुनर्चक्रण बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन में मदद करता है और पर्यावरण प्रदूषण को रोकता है।
- एकीकृत कृषि प्रणाली में किसान के पास पूरे वर्ष नकदी प्रवाह रहने से संसाधनहीन किसान समाज में स्थापित हो जाते हैं।
- जैविक कचरे के पुनर्चक्रण से रासायनिक उर्वरक के प्रयोग को कम किया जा सकता है, जिससे मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार होगा।
- इस कृषि प्रणाली में चारे, चारागाह और वृक्ष प्रजातियों को शामिल करके पशुधन के लिए चारे के संकट को कुछ हद तक हल किया जा सकता है।
- वनवर्धन-घटक ईंधन और लकड़ी के स्रोत के रूप

में कार्य करता है।

- लकड़ी के उत्पादन में वृद्धि से वन संसाधनों पर दबाव कम हो जाता है।

निष्कर्ष

भारतीय परिदृश्य में एकीकृत कृषि प्रणाली की लाभप्रदता और व्यवहार्यता पर किए गए विभिन्न अध्ययनों ने युवा पीढ़ी के लिए स्थिरता, रोजगार सृजन और उद्यमशीलता योग्यता के प्रति एक आशाजनक परिप्रेक्ष्य प्रदर्शित किया है। दुनिया भर में किसानों द्वारा एकीकृत दृष्टिकोण की सफलता विकासशील देशों के छोटे और सीमांत किसानों को उनकी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और उन्हें स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम बनाने की एक दूरदर्शी आशा देती है। इस प्रणाली के परिणामस्वरूप काम के अवसरों में वृद्धि और कृषि संसाधनों के कुशल उपयोग से कृषक परिवारों के लिए उत्पादकता में वृद्धि हुई है। कृषि उत्पादन प्रणाली की दीर्घकालिक व्यवहार्यता और लाभप्रदता सुनिश्चित करने के लिए यह प्रणाली आवश्यक है। किसी पौधे की लगभग 90 प्रतिशत से 95 प्रतिशत पोषण संबंधी जरूरतें संसाधनों के पुनर्चक्रण से पूरी होती हैं जिससे खेती की लागत कम हो जाती है और लाभप्रदता बढ़ जाती है। एकीकृत कृषि प्रणाली विभिन्न कृषि उद्यमों के लिए कम लागत प्रदान करता है जिससे बेहतर लाभ और कृषि आय में वृद्धि होती है।

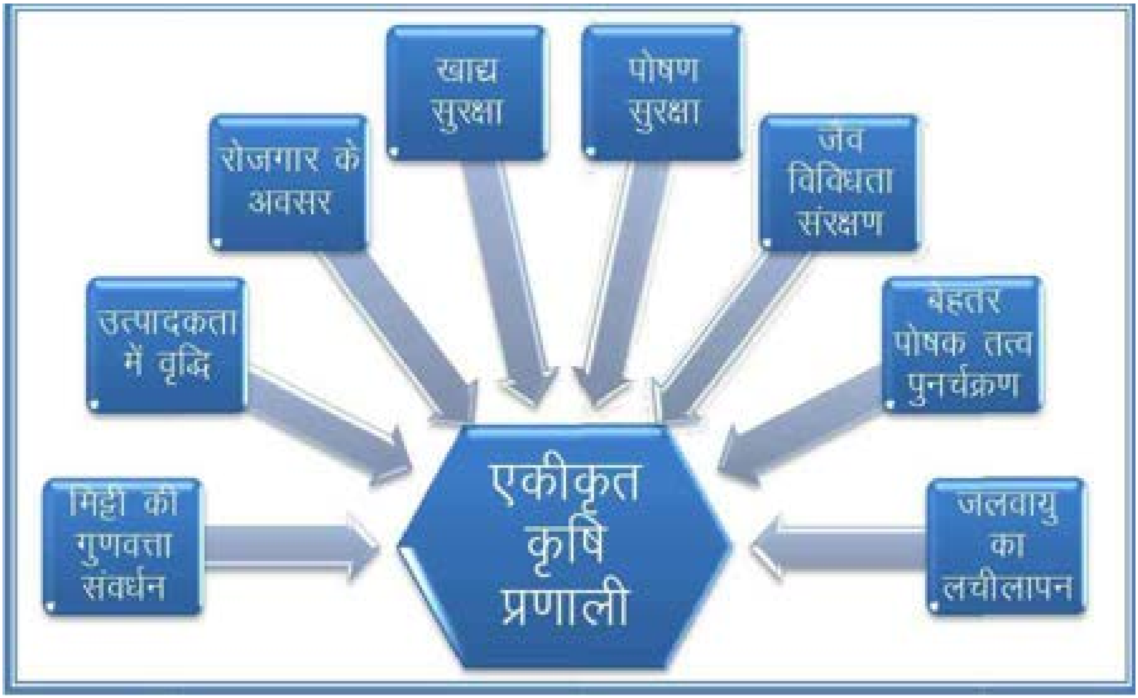

हिंदी भाषा देश की एकता की कड़ी है।
– डॉ. जाकिर हुसैन